

– बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों हेतु हैण्डपम्प –

जल ही जीवन है। यह कहावत सत्य है, इसी कारण पृथ्वी पर कोई भी प्राणी चाहे वह मनुष्य हो अथवा जीव जन्तु। पानी के बिना जीवित नहीं रह सकता है। पृथ्वी पर पानी के कई स्रोत हैं, जैसे – समुद्र, नदी, तालाव, झरना, पहाड़ इत्यादि। किन्तु सभी पानी पीने योग्य नहीं होता है। कुछ पानी नमकीन, कुछ पानी प्रदूषित एवं कुछ पानी में अम्लीय एवं क्षारीय मात्रा भी पायी जाती है। यह पानी किसी भी दृष्टि से पीने योग्य नहीं होता है। दूषित पानी पीने से मनुष्यों में कई प्रकार की बीमारियाँ हो जाती हैं। इस लिये लोग दूषित पानी पीने के स्थान पर स्वच्छ एवं शुद्ध पानी पीने की कोशिश करते हैं। शुद्ध पानी पीने हेतु लोग अनेको उपाय करते हैं। घरों में अधिक गहराई (बोरिंग) वाले हैण्डपम्प लगवाते हैं, ताकि शुद्ध पानी पी सकें। कुछ लोग पानी को फिल्टर से छान कर पीते हैं, एवं कुछ लोग पानी को उबाल कर पीते हैं। किन्तु यह प्रक्रिया शहरों में रहने वाले लोगों तक ही सीमित रहता है। भारत एक विकासशील देश है। यहाँ की 75 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में रहती है। यहाँ के लोग पीने हेतु कुँओं, कम बोरिंग वाले हैण्डपम्पों अथवा सरकारी हैण्डपम्पों के पानी का प्रयोग करते हैं। लोग हैण्डपम्पों के पानी को बिना जाँच किये ही पीने लगते हैं। लोगों को इस बात का विश्वास रहता है कि पानी साफ है। देश में कई ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ के पानी में आर्सेनिक, आयर्न, फ्लोराइड, नाइट्रेट, ठोस पानी अधिक मात्रा में पाया जाता है। इससे लोग कई प्रकार के बीमारियों के शिकार हो जाते हैं।

गांवों में अधिकांश लोग कम बोरिंग वाले हैण्डपम्पों एवं कुँओं के पानी को पीने हेतु इस्तेमाल करते हैं। यद्यपि वर्तमान समय में लोग कुँओं का प्रयोग न के बराबर करते हैं। किन्तु कम बोरिंग वाले हैण्डपम्पों का पानी भी ज्यादा शुद्ध नहीं होता है। नदियों के आसपास के गांवों में पानी का स्तर काफी ऊँचा होता है। इन क्षेत्रों में लोगों को औसतन 20 फीट पर भूमिगत पानी आसानी से मिला जाता है। कम खर्च पर हैण्डपम्प उपलब्ध होने के कारण लोग अपने अपने घरों में कम ऊँचाई वाले हैण्डपम्प लगवाते हैं। इन हैण्डपम्पों को लगवाने हेतु लोगों को 1000 से 1200 ₹ तक खर्च करना पड़ता है। इन हैण्डपम्पों का पानी साफ एवं काफी ठंडा होता है। क्योंकि नीचे बालू की मात्रा अधिक होने से पानी ठंडा होता है। स्वाद में भी अच्छा होता है। स्थानीय लोगों को यह पानी काफी अच्छा लगता है। लोग इस पानी को बड़े चाव से पीते हैं। यदि लोगों के घरों में पहले से यह छोटे हैण्डपम्प लगे हैं, तो वे लोग सरकारी हैण्डपम्पों के पानी का प्रयोग नहीं करते हैं। क्योंकि लोग दूषित पानी के दुष्परिणामों से अनभिज्ञ रहते हैं।

हमारे देश में पानी पीने हेतु कई प्रकार के हैण्डपम्प पाये जाते हैं। भिन्न भिन्न राज्यों में भिन्न भिन्न प्रकार एवं साइज के हैण्डपम्प लगवाते हैं। परन्तु लोग इस बात को अनदेखी कर देते हैं कि हैण्डपम्प से निकलने वाला पानी कितना शुद्ध है। इस पानी की रासायनिक जाँच नहीं करवाते हैं। लोग केवल साफ पानी देखते हैं।

बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों के लोगों के लिये भी यही समस्या विद्यमान है। नदी के आस पास के क्षेत्रों में 15 से 20 अथवा 25 फीट तक लोगों को भूमिगत पानी मिल जाता है, और स्थानीय लोग अपने अपने घरों में कम बोरिंग वाले हैण्डपम्प लगवाते हैं। इन हैण्डपम्पों की ऊँचाई जमीन से 2 से 2.5 फीट होती है। किन्तु प्रति वर्ष बाढ़ के आने से ये सभी हैण्डपम्प डूब जाते हैं। उस दौरान लोगों को पानी पीने की समस्या उत्पन्न हो जाती है। लोग बाढ़ का पानी पीने के लिये बाध्य होते हैं। जिससे लोगों को कई प्रकार की बीमारियों का सामना करना पड़ता है। स्थानीय लोगों का मानना है कि यदि हैण्डपम्पों को 5 से 6 फीट पटाई कर लगाया जाय तो बाढ़ में यह नहीं डूबेगा। परन्तु लोग इस उपाय को अपनाते नहीं हैं।



एक पहल –

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ से लगभग 126 कि०मी० दूर हिमालय की तराई में जिला बहराइच स्थित है। हिमालय की तराई में यह जिला स्थित होने के कारण प्रति वर्ष पड़ोसी देश नेपाल के बरसात का पानी घाघरा नदी में सम्मिलित हो जाता है। जिससे इस जनपद के जरवल, कैसरगंज, महसी, फखरपुर, शिवपुर, मीहिंपूरवा एवं बलहा आदि विकास खण्डों के सैकड़ों गांव एवं पूरवे जलमग्न हो जाते हैं। प्रति वर्ष बरसात के समय घाघरा नदी के आसपास के क्षेत्रों में रहने वाले गांव के लोगों

को अनेको समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अनेको समस्याओं में शुद्ध पेय जल की समस्या भी प्रमुख है। इस समस्या से निपटने हेतु सहभागी शिक्षण केन्द्र ने उन्नति, माल्टेसर इंटरनेशनल एवं ईको, जर्मनी के सहयोग से कैसरगंज विकास खण्ड के 5 वं जरवल विकास खण्ड के 3 बाढ़ प्रभावित ग्राम पंचायतों में **सामुदायिक आपदा प्रबंधन कार्यक्रम** का संचालन किया। कार्यक्रम के अर्न्तगत इन ग्राम पंचायतों में समुदाय के सहयोग से 67 ऊँचे हैण्डपम्प लगाये गये। ताकि बाढ़ के दौरान समुदाय के लोग शुद्ध पानी पी सकें।

प्रक्रिया –

हस्तक्षेपित ग्राम पंचायतों के पूर्वों में हैण्डपम्प लगाने के पूर्व समुदाय के लोगों के साथ ग्राम पंचायत/पूर्वा स्तरीय बैठक किया गया। इस बैठक का मुख्य उद्देश्य हैण्डपम्प हेतु स्थान का चयन, समुदाय की भूमिका, निगरानी एवं मरम्मत किस प्रकार हो, इसके लिये सामुहिक रणनीति का निर्माण करना। इस समस्या के समाधान के तौर पर समुदाय ने बताया कि यदि ग्राम पंचायत सरकारी हैण्डपम्पों को 5 से 6 फीट मिट्टी से पटाई करने के बाद लगाये तो बाढ़ के दौरान हैण्डपम्प नहीं डूबेगा। लोग नाव के सहारे शुद्ध पानी भर लायेगे। समुदाय का कहना है कि ग्राम पंचायतें अब हैण्डपम्प नहीं लगवाती हैं। बल्कि जल निगम लगाती हैं। जो अपने मानक के अनुरूप कार्य करती हैं। समस्या का कोई स्थाई समाधान न मिलता देखकर केन्द्र के प्रतिनिधियों ने बताया कि **सामुदायिक आपदा प्रबंधन कार्यक्रम** के अर्न्तगत उच्चिकृत हैण्डपम्प लगाने का प्रस्ताव है। परन्तु ये हैण्डपम्प कहाँ लगाया जाय जिससे सभी लोगों को बाढ़ के दौरान पानी भर सकें। इस पर ग्राम पंचायत के लोग आपस में विचार विमर्श कर बताया कि ग्राम पंचायत का पहला हैण्डपम्प सार्वजनिक स्थल मन्दिर पर लगवाया जाय। सभी पूर्वों के लोग इस प्रस्ताव पर सहमत हो गये। परन्तु अब यह प्रश्न उठा कि हैण्डपम्प की रखरखाव एवं देखभाल कैसे किया जाय। साथ ही हैण्डपम्प लगने के दौरान समुदाय की भूमिका की सुनिश्चित हो। समुदाय के लोग बड़े समूह में बैठ कर योजना बनाया। योजना में पूर्वों के लोगों की जिम्मेदारी एवं भूमिका सुनिश्चित किया गया। लोगों ने बताया कि हैण्डपम्प की निगरानी हेतु पूर्वों स्तर पर 5 सदस्यीय एक कमेटी का गठन किया जाय। इस कमेटी में महिलाओं को भी शामिल किया जायेगा। इस कमेटी के सदस्य हैण्डपम्प की देखभाल एवं मरम्मत करवाने की जिम्मेदारी होगी। तथा पूर्वों के सभी लोग हैण्डपम्प की पटाई के दौरान श्रमदान करेंगे। समुदाय के लोगों ने आपस में मिलकर सर्वसम्मति से 5 सदस्यों को कमेटी हेतु चयन किया। तदपश्चात समुदाय के लोगों के साथ शुद्ध पानी एवं हैण्डपम्प की ऊँचाई पर विस्तृत चर्चा होने लगी। सर्वसम्मति से समुदाय के लोगों ने एक सहमति बनाई कि 80 फीट पर पानी शुद्ध मिलता है। परन्तु बाढ़ के दौरान पूर्वों में 4 से 5 फीट तक पानी भर जाता है। इसलिये हैण्डपम्प की ऊँचाई सतह ये 6 से 7 फीट होनी चाहिये। तभी बाढ़ के दौरान यह हैण्डपम्प डूबेगा नहीं, और लोग नाव के सहारे आकर शुद्ध पानी भर सकते हैं।

बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में हैण्डपम्प लगाने के पूर्व ध्यान रखने हेतु मुख्य बातें —————

- हैण्डपम्प लगाने के पूर्व स्थान के चयन एवं निगरानी हेतु समिति के सदस्यों के चयन हेतु समुदाय के साथ चर्चा एवं बातचीत किया जाना चाहिये।
- हैण्डपम्प की बोरिंग कितनी फीट होनी चाहिये। जहाँ शुद्ध पानी मिल सके। इसके लिये स्थानीय समुदाय एवं हैण्डपम्प मिन्त्री अथवा नलकूप विभाग से जानकारी लेना चाहिये।
- भूमि स्तर से हैण्डपम्प की ऊँचाई होनी चाहिये। इसके लिये समुदाय से मिलकर आपस में चर्चा करना चाहिये।
- समुदाय के पानी पीने पूर्व जल परीक्षण कर लेना चाहिये। इसके लिये हैण्डपम्प निगरानी समिति के सदस्यों को जल परीक्षण के बारे में प्रशिक्षण दिया जाना चाहिये, एवं परीक्षण उपरान्त प्रत्येक समिति को एक जल परीक्षण कीट दिया जाना चाहिये। ताकि पूर्वों का कोई भी सदस्य अपने हैण्डपम्प के पानी की जाँच कर सके।
- रासायनिक जल परीक्षण हेतु जिले में स्थित जल निगम के प्रयोगशाला में हैण्डपम्प के पानी को परीक्षण हेतु भेज देना चाहिये, तथा प्रयोगशाला रिपोर्ट को समुदाय के चर्चा करना चाहिये।
- प्रत्येक स्तर पर समुदाय की सहभागिता सुनिश्चित किया जाना चाहिये। ताकि समुदाय इस सम्पत्ति को अपना समझे। इसका रखरखाव रखे।
- सम्पूर्ण प्रक्रिया पूर्ण हो जाने के बाद समुदाय को हैण्डपम्प हस्तान्तरित कर दिया जाना चाहिये।

बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में हैण्डपम्प की बनाबट –

बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में कम लगात एवं कम खर्च पर मरम्मत के उद्देश्य से दो प्रकार के हैण्डपम्प लगाये गये हैं। इस हैण्डपम्प के टूटने फूटने एवं बिगड़ने पर समुदाय के लोग आसानी से कम खर्च पर मरम्मत कर सकते हैं।

मॉडल न0 – 1



इस माडल के हैण्डपम्प को बनाने के लिये समुदाय के सहयोग से स्थान का चिन्हिकरण कर लेना चाहिये। स्थान चयन करने के दौरान इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिये कि बाढ़ के दौरान इस हैण्डपम्प से कितने परिवार के लोग पानी पी सकते हैं। हैण्डपम्प लगाने हेतु स्थान समुदाय के बीचों बीच है, अथवा नहीं। तदपश्चात समुदाय के साथ बैठक के दौरान पूर्व में आये बाढ़ की अधिकतम ऊँचाई को जानने का प्रयास करते हैं। ताकि हैण्डपम्प के प्लेटफार्म निर्माण की ऊँचाई कम न हो जाये। पूर्व में आये बाढ़ की अधिकतम ऊँचाई से 1-2 फीट अधिक ऊँचाई का प्लेटफार्म बनाने का प्रयास करते हैं। ताकि बाढ़ में भी हैण्डपम्प पूर्ण रूप से डूब न जाये।

सर्वप्रथम हैण्डपम्प को सुनिश्चित स्थान पर 80 फीट बोरिंग के माध्यम से लगा दिया गया। तदपश्चात हैण्डपम्प को धरातल से 6 से 7 फीट ऊँचा करने हेतु मिट्टी पटाई किया गया। चूंकि बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में बलुई मिट्टी अधिक होने के कारण मिट्टी दीर्घ समय तक जम नहीं सकती है। तथा बाढ़ के दौरान पानी के बहाव से बलुई मिट्टी बहने का खतरा बना रहता है। इस स्थिति से निपटने हेतु स्थानीय संसाधन अर्थात सीमेंट की खाली बोरी में मिट्टी भरकर उसे गोल आकृति में एक के ऊपर एक रखकर 6 से 7 फीट ऊँचा टंकी के आकार का बना लिया जाता है। खाली टंकी में मिट्टी भर दिया जाता है। बोरीयों को सड़ने एवं गलने तथा चूहों से बचाने के लिये बाहर से भी मिट्टी से ढक दिया गया। हैण्डपम्प से पानी गिरने के स्थान पर हैण्डपम्प के चारो ओर 2.5 फीट वृत्ताकार ठोस ईट एवं सीमेंट का चबुतरा बना दिया जाता है। तथा धरातल से हैण्डपम्प पर चढ़ने हेतु चार सीढ़ी बना दिया जाता है। बाहर से मिट्टी वाले पटाई पर घास लगा दिया जाता है। ताकि घास की जड़े घनाकर जाली नुमा होने से मिट्टी को पकड़े रहती है। तथा बाढ़ में मिट्टी कटाव भी नहीं हो पाता है, और पटाई सुरक्षित रहता है।

हैण्डपम्प की लागत –

हैण्डपम्प – मॉडल संख्या – 1

सामग्री	मात्रा	दर	कुल खर्च
ईट	850	3 ^{०0}	2550 ^{०0}
मोरंग (मोटी बालू)	10 फीट	38 ^{०0}	380 ^{०0}
बालू	20 फीट	10 ^{०0}	200 ^{०0}
सीमेंट की खाली बोरी	195	2 ^{०0}	390 ^{०0}
सीमेंट ; बलुई	8 बोरी	220 ^{०0}	1760 ^{०0}
हैण्डपम्प सेट	1 सेट	2950 ^{०0}	2950 ^{०0}
प्लम्बर मजदूरी	.	1200 ^{०0}	1200 ^{०0}

राज मिस्त्री	4	200 ^{०००}	800 ^{०००}
कैश फार वर्क	59	100 ^{०००}	5900 ^{०००}
दुलाई खर्च		1500 ^{०००}	1500 ^{०००}
कुल खर्च –			17630 ^{०००}

हैण्डपम्प हेतु प्रयोग की जाने वाली सामग्री –

सामग्री	साइज	मात्रा
पी०वी०सी० पाइप	1. 25 इंच	50 फीट
पी०वी०सी० पाइप	2 इंच	70 फीट
पी०वी०सी० पाइप (जाली युक्त)	2 इंच	10 फीट
जी०आई पाइप	1. 25 इंच	5 फीट
हैण्डपम्प मशीन	5 न०	1
पी०वी०सी० साकेट	2 इंच	4 पीस
पी०वी०सी० बन्द साकेट	2 इंच	2 पीस
फिल्टर रिबन	.	25 मीटर
सुलेशन ट्यूब		2 पीस
क्लैम्प		1 पीस
हैण्डपम्प जाम नट बोल्ट	1 फीट	4 पीस
प्लास्टिक रस्सी		5 बन्डल
सफेदा		1 डिब्बा
सुती धागा		4 बन्डल
साईकिल ट्यूब		1 पीस
बैंड (हैण्डपम्प के मूँह पर लगाने हेतु)		1 पीस
वाल		1 पीस
वाशर		1 पीस
स्टील जाली	4 X 4 इंच	1 पीस
पी०वी०सी० पाइप	2.5 इंच	8 फीट
पी०वी०सी० साकेट	2.5 इंच	1 पीस
पी०वी०सी० बैंड	2.5 इंच	1 पीस
संगमरमर	1X1 फीट	1 पीस
लोहे का छल्ला		2 पीस
जाम नट बोल्ट	1 फीट	4 पीस

मॉडल संख्या – 2

बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में तेज बहावदार पानी अथवा कटावदार पानी होने से मिट्टी के कटाव का भय होता है। ऐसी स्थिति में उन स्थानों पर टोस कंक्रीट युक्त ऊँचा हैण्डपम्प निर्माण करने की आवश्यकता हुई। ताकि बाढ़ के दौरान तेज धारा में भी हैण्डपम्प के चबुतरे को किसी प्रकार का नुकसान न हो सके। बाढ़ के दौरान पूरवें के लोग आसानी से नाव द्वारा आकर शुद्ध पानी भी सके। प्रयोग के तौर पर बहराइच जिले के कैसरगंज विकास खण्ड के मतरेपुर ग्राम पंचायत में ईट, बालू, गिट्टी के सहयोग से 6 फीट ऊँचा, 2.5 वृत्त का वर्गाकार चबुतरा निर्माण का किया गया। इस हैण्डपम्प के निर्माण में साधारण तकनीकी (जोड़ाई) का प्रयोग



किया गया। प्लेटफार्म के मध्य में मिट्टी भरा जायेगा।

हैण्डपम्प की लागत –

सामग्री	मात्रा	दर	कुल खर्च
ईट	3700	3.00	11000.00
मोरंग (मोटी बालू)	55 फीट	38.00	2090.00
बालू	85 फीट	10.00	850.00
गिट्टी	10 फीट	38.00	380.00
सीमेंट (ACC)	18 बोरी	220.00	3960.00
हैण्डपम्प सेट	1 सेट	2950.00	2950.00
डीजल इंजन खर्च	.	100.00	100.00
प्लम्बर मजदूरी	.	1200.00	120.00
राज मिस्त्री	10	200.00	2000.00
कैश फार वर्क	30	100.00	3000.00
दुलाई खर्च	.	1700.00	1700.00
कुल खर्च –			29330.00

इस हैण्डपम्प में भी मॉडल संख्या – 1 के सामान ही उतनी मात्रा के सामग्रियों का प्रयोग किया गया है। परन्तु इस हैण्डपम्प के निर्माण में कुल लागत खर्च लगभग 30000.00 रू० खर्च हुआ। लागत खर्च अधिक खर्च होने के कारण यह हैण्डपम्प का चबुतरा अन्य हैण्डपम्पों के चबुतरों से काफी ठोस, मजबूत एवं टिकाऊ बना। समुदाय ने भी इसके निर्माण में होने वाले वस्तुओं एवं सामग्रियों के गुणवत्ता को सराहा।

मॉडल संख्या – 3

मॉडल संख्या 1 एवं 2 के निर्माण के दौरान समुदाय एवं राज मिस्त्री से अनेको अनुभव एवं सीख प्राप्त हुआ। तदपश्चात इंजीनियर से विस्तृत बातचीत किया गया कि बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में कम लागत पर मजबूत एवं टिकाऊ ऊँचा हैण्डपम्प का निर्माण किस प्रकार किया जाय। इंजीनियरिंग के क्षेत्र में प्रयोग होने वाले सभी पद्धतियों पर अध्ययन करने के उपरान्त यह निर्णय लिया गया कि यदि प्लेटफार्म को रैट ट्रैप बैंड (Rat-Trap Band Technique) तकनीति का प्रयोग किया जाय। इस पद्धति से ईट, बालू, सीमेंट का बचत होता है। परन्तु इस तकनीक के माध्यम से



स्थानीय राज मिस्त्री

आसानी एवं सुलभता पूर्वक निर्माण नहीं कर सकता है। इसके लिये निर्माण स्थल पर राज मिस्त्री को दिशा निर्देश हेतु इंजीनियर की उपस्थिति अनिवार्य है। इस पद्धति में प्लेटफार्म के बीच मिट्टी भरा जायेगा, तथा मिट्टी भरने के उपरान्त पानी डालने बाद कही दीवार में दरार न पड़े जाये इसके लिये प्लेटफार्म के चारो दीवारों में गोल छेद बनाया जाता है। ताकि प्लेटफार्म के अन्दर बनने वाला गैस इन छेदों से बाहर निकल जाये। और प्लेटफार्म को किसी प्रकार का क्षति न हो।

हैण्डपम्प की लागत –

सामग्री	मात्रा	दर	कुल खर्च
ईट	2000	3.00	6000.00
मोरंग (मोटी बालू)	35 फीट	34.00	1190.00
बालू	75 फीट	10.00	750.00
गिट्टी	5 फीट	40.00	120.00
सीमेंट (ACC)	8 बोरी	220.00	1760.00
हैण्डपम्प सेट	1 सेट	3100.00	3100.00
लोहे का छड़	2 कि०ग्रा०	41.00	82.00
प्लम्बर मजदूरी	.	700.00	700.00
राज मिस्त्री	.	1000.00	1000.00
कैश फार वर्क	12 मानव दिवस	100.00	1200.00
दुलाई खर्च	1 ट्रैक्टर	600.00	600.00
कुल खर्च –			16502.00

उपरोक्त हैण्डपम्प में मॉडल संख्या 1 एवं 2 की भाँति सभी सामग्रियों का प्रयोग किया गया है।

Rat-Trap Bond

Rat-trap bond is laid by placing bricks on their sides having a cavity of 4 (100 mm), with alternate course of stretchers and headers. The following are some features of R trap bond.

- The headers and stretchers are staggered in subsequent layers to give more strength to the walls.
- The strength of R trap bond is equal to the standard 9" (229mm) brick wall but consumes 20% less bricks, 24% less cement and 25% lesser weight than English bond.
- This bond helps in maintaining a good thermal comfort inside the building.

हैण्डपम्प की लागत –

सामग्री	मात्रा	दर	कुल खर्च
ईट	3050	3.20	9760.00
मोरंग (मोटी बालू)	88 फीट	30.00	2640.00
गिट्टी	7 फीट	43.00	301.00
सीमेंट (ACC)	15 बोरी	290.00	4350.00
हैण्डपम्प सेट	1 सेट	2922.24	2922.46
प्लम्बर मजदूरी	.	1000.00	1000.00
राज मिस्त्री	.	3800.00	3800.00
संगमरमर	1 पीस	27.00	27.00
लोहे का छल्ला	2 पीस	13.00	26.00
सफेद सीमेन्ट	2 कि०ग्रा०	14.00	28.00
ट्रैक्टर खर्च	.	2681.45	2681.45
मजदूरी	.	396.00	396.00
कुल खर्च –			27931.91

इस हैण्डपम्प में मॉडल संख्या 1, 2 एवं 3 में प्रयोग की गई सामग्री एवं उतनी मात्रा का प्रयोग किया गया।

बोरिंग के उपरान्त सभी हैण्डपम्पों के पानी का टर्बीडीटी, पी०एच०, हाडनेस, क्लोराइड, नाइट्रेट का जाँच किया गया। ताकि इस हैण्डपम्प का पानी पीने योग्य है अथवा नहीं। इस पानी के पीने से समुदाय के लोगों को किसी प्रकार का नुकसान न हो। तद् उपरान्त इस पानी का रासायनिक जल परीक्षण हेतु जल निगम के प्रयोगशाला में भेज दिया गया। जहाँ पानी में

आरसेनिक, फ्लोराइड, की मात्रा की जाँच की गई। युरोपियन कमीशन फॉर हयुमेटरियन आरगानाईजेश (ईको) के अनुसार यदि उनके द्वारा वित्तीय सहयोग से किसी हैण्डपम्प के पानी में आरसेनिक, नाइट्रेट अथवा फ्लोराइड की मात्रा अधिक पायी जाती है। तो हैण्डपम्प को तत्काल बन्द कर दिया जाता है। अथवा हैण्डपम्प के प्लेटफार्म के दीवार पर पानी के प्रयोग करने के बारे में दीवार लेखन कर दिया जाता है। ताकि समुदाय के लोगो को इस बात की जानकारी हो जाय कि इस हैण्डपम्प के पानी का उपयोग किस प्रकार किया जायेगा।

हैण्डपम्प के पूर्ण रूप से तैयार हो जाने के उपरान्त समुदाय की उपस्थिति में हैण्डपम्प निगरानी समिति को हस्तांतरित कर दिया जाता है। ताकि हैण्डपम्प निगरानी समिति के सदस्य इस हैण्डपम्प की देखरेख एवं टूटफूट जाने पर मरम्मत करवा सकें।